दैनिक भास्कर अजमेर 06-04-2022

• अजमेर के बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र की ओर से तैयार किए गए विशेष गुणवत्ता के बीजों से हुआ यह संभव

## नागालैंड, असम और बंगाल में उगेंगे अब

# अजमेर धनिया, अजमेर सौंफ, अजमेर अजवान व अजमेर मैथी

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र, निदेशक

डॉ. शैलेंद्र नाथ सक्सेना।

आरिफ कुरैशी | अजमेर

राजस्थान के शुष्क वातावरण में पैदा होने वाले बीजीय मसाले निकट भविष्य में अब देश में अधिक नमी वाले उत्तर पूर्वी राज्यों असम व नागालैंड के साथ ही उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के किसान भी अपने खेतों में उगा सकेंगे। यह संभव हुआ है राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र अजमेर(एनआरसीएसएस) के द्वारा बीजीय मसालों के उन्नत और गुणवत्तापूर्ण बीजों की नई किस्म तैयार किए जाने से। संस्थान की ओर से देश के विभिन्न राज्यों में बीजीय मसाला फसलों की पैदावार करने की तैयारी की जा रही है। आमतौर पर मसालों का नाम सुनते ही हमारे सामने काली मिर्च, लौंग, दाल चीनी आदि जेहन में आते हैं। इन मसालों के साथ ही कुछ बीजीय मसाले भी हैं जो खाने के स्वाद को बढ़ाने के साथ ही सुगंध भी पैदा करते हैं। इन बीजीय मसालों में मैथी, कलौंजी, जीरा, धनिया और अजवायन शामिल हैं। बीजीय मसाले मैथी, कलौंजी, सौंफ, जीरा और धनिया आदि राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के शुष्क और उष्णकटिबंधी एवं शीतोष्ण जलवायु में पैदा होने वाली प्रमुख फसलें हैं। इन राज्यों में ही अधिकांश पैदावार इन फसलों की होती है। उत्तरी भारत के अलावा देश के अन्य प्रदेशों के किसानों का रूझान भी परंपरागत फसलों के अलावा बीजीय मसालों की खेती की ओर बढ़ाने की दिशा में कोशिश की जा रही हैं।

**50**

एकड़ यानी 104 बीघा क्षेत्र में बीजीय मसालों की नई किस्म तैयारी के लिए रिसर्च

एनआरसीएसएस की स्थापना दो दशक पूर्व हुई थी। 50 एकड़ यानी करीब 104 बीघा क्षेत्र में संस्थान विभिन्न बीजीय मसालों की प्रजातियों पर रिसर्च करता है। इसके साथ ही कुछ प्रगतिशील किसानों का भी सहयोग लेता है। केंद्र में 18 वैज्ञानिक हैं जो शोध कर रहे हैं।

**» उड़ीसा सरकार ने आमंत्रित किया** | डॉ. सक्सेना ने बताया कि उड़ीसा सरकार राज्य में बीजीय मसालों की खेती की शुरूआत करने के लिए तैयारी कर रही है। यहां के कोरापुट और नबरंगपुर में बीजीय मसालों की खेती के लिए रिसर्च कराया जाना प्रस्तावित है। यहां यह शोध किया जाएगा कि यहां की जलवायु में कौन-कौन से बीजीय मसाले पैदा किए जा सकते हैं।

**» बांदा पश्चिम बंगाल में मैथी** | केंद्र के निदेशक डॉ. शैलेंद्र नाथ सक्सेना ने जानकारी दी कि मैथी राजस्थान की शुष्क वातावरण की प्रमुख बीजीय मसाला फसल है। मैथी की खेती के लिए पश्चिम बंगाल के बांदा में प्रयोग शुरू किए गए हैं। यहां की बांदा यूनिवर्सिटी इसमें सहयोग कर रही है। स्थानीय किसानों को प्रेरित करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों का भी सहयोग लिया जा रहा है।

**» तेलंगाना में कलौंजी** | तेलंगाना में चावल, ज्वार, मक्का, हरा चना, काला चना, मूंग फली, सूरजमुखी, बंगाल चना, मिर्च, प्याज और आम की फसलें किसानों द्वारा उगाई जाती हैं। एनआरसीएसएस की ओर से तेलंगाना के आदिलाबाद में किसानों को कलौंजी की खेती के लिए तैयार किया गया है।

**» असम में मैथी, धनिया, सौंफ, कलौंजी और अजवायन** | असम की जलवायु के हिसाब से यहां की मुख्य फ़सल चावल जूट, चाय, कपास, तिलहन, गन्ना और आलू हैं। मसाला फसलों की तैयारी यहां भी शुरू की जा रही है। केंद्र में तैयार किए गए एएफजी-3(मैथी), एए-93, एए-73(अजवायन),एएन-1, एएन-20 (कलौंजी), एएफ-1, एफ-2, एएफ-3 (सौंफ), अजमेर कोरियंडर-2(धनिया) के बीज से यहां पर फसलों के प्रयोग शुरू कर दिए गए हैं।

## इसलिए हुआ है नोटिफिकेशन

**1** अजमेर धनिया-2, तना सूजन रोग प्रतिरोधी है। इसके उपयोग से धनिया की खेती में पिछली प्रजाति की तुलना में 6.72 प्रतिशत अधिक उत्पादकता एवं सुगंध तेल में वृद्धि हुई है।

**2** अजमेर धनिया-3, उच्च उत्पादन, चूर्णिल आसिता प्रतिरोधी, पिछली प्रजाति की तुलना में 24 प्रतिशत अधिक उत्पादकता एवं सुगंध तेल में वृद्धि हुई है।

**3** अजमेर सौंफ -3, उच्च उत्पादन और अधिक संगंध तेल, पिछली प्रजाति की तुलना में इन बीजों में12.6 प्रतिशत अधिक उत्पादकता और 18.5 प्रतिशत अधिक सुगंध तेल मिलता है।

**4** अजमेर अजवाइन-73 से भी उच्च उत्पादन के साथ ही अधिक सुगंध तेल मिलता है। पिछली प्रजाति की तुलना में 25.9 प्रतिशत अधिक उत्पादकता और 7.27 प्रतिशत अधिक सुगंध तेल मिलता है।

**5** अजमेर सेलरी-2, में भी पिछली प्रजाति की तुलना में23.2 प्रतिशत अधिक उत्पादकता और 17 प्रतिशत तेल सुगंध

**6** अजमेर कलौंजी-1, विशिष्टता यही है कि अधिक उत्पादन के साथ ही अधिक तेल मिलता है। पिछली प्रजाति की तुलना में 18.3 प्रतिशत अधिक उत्पादकता और 33.76 प्रतिशत तेल सुगंध देती है।

**7** अजमेर मैथी-5 अधिक उपज, पिछली प्रजाति की तुलना में 11.2 प्रतिशत अधिक उपज मिलती है।

**8** अजमेर हरा धनिया-1 विपरीत या गैर मौसम में हरी पत्तियों का उत्पादन के लिए तैयार की गई है। पिछली प्रजाति की तुलना में इससे 29.73 प्रतिशत अधिक उत्पादन मिल रहा है।

• बीजों की 8 उन्नत प्रजातियों का अजमेर के नाम पर गजट नोटिफिकेशन हुआ

**अजमेर धनिया-2, अजमेर धनिया-3, अजमेर सौंफ -3, अजमेर अजवायन-73, अजमेर सेलरी-2, अजमेर कलौंजी-1, अजमेर मैथी -5 और अजमेर हरा धनिया-1 प्रजातियों का गजट नोटिफिकेशन हो गया है।**